Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shri Shani Chalisa

।।दोहा।।

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुख दूर करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

अर्थ – हे गिरिजासूत गणेश! आपकी जय हो! आप मंगलकरता एवं कृपा करने वाले है। हे नाथ! दिनों के दुख दूर करके उन्हें प्रसन्नता प्रदान करें। हे प्रभु शनिदेव! आपकी जय हो! हे सूर्यसुत! आप मेरी विनय सुनकर कृपा कीजिए और लोगो की लज्जा की रक्षा कीजिए।

।।चौपाई।।

जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥

अर्थ – हे दयासिंधु शनिदेव आपकी जय हो! जय हो! आप सदैव भक्तों की पालना करते हैं।

चारि भुजा, तनु श्याम विराजै।

माथे रतन मुकुट छबि छाजै॥

अर्थ – आपकी चार भुजाएं हैं, शरीर पर श्यामलता शोभा दे रही है, मस्तक पर रत्न-जड़ित मुकुट आभायमान है।

परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥

अर्थ – आपका मस्तक विशाल एवं मन को मोहने वाला है। आपकी दृष्टि टेढ़ी (वक्र) और भौंहें विकराल हैं।

कुण्डल श्रवण चमाचम चमके।
हिय माल मुक्तन मणि दमके॥

अर्थ – आपके कानों में कुंडल चमक रहे हैं तथा छाती पर मोतियों तथा मणियों की माला शोभायमान है।

कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिच करैं अरिहिं संहारा॥

अर्थ – आपके हाथों में गदा, त्रिशूल और कुठार शोभा दे रहे हैं। आप पलभर में ही शत्रुओं का संहार कर देते हैं।

पिंगल, कृष्णो, छाया नन्दन।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुखभंजन॥

अर्थ – आप दुखों का विनाश करने वाले पिंगल, कृष्ण, छायानंदन, यम, कोणस्थ और रौद्र हैं ।

सौरी, मन्द, शनी, दश नामा।

भानु पुत्र पूजहिं सब कामा॥

अर्थ – सौरि, मंद, शनि और सूर्यपुत्र आदि आपके दस नाम हैं। इन नामों का जाप करने से सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

जा पर प्रभु प्रसन्न ह्वैं जाहीं।

रंकहुँ राव करैं क्षण माहीं॥

अर्थ – हे प्रभु! आप जिस पर प्रसन्न हो जाएं उस निर्धन को पलक झपकते राजा बना देते हैं।

पर्वतहू तृण होई निहारत।

तृणहू को पर्वत करि डारत॥

अर्थ – आपकी दृष्टि पड़ते ही पर्वत तिनके जैसा हो जाता है तथा आप चाहें तो तिनके को भी पर्वत बना सकते हैं।

राज मिलत बन रामहिं दीन्हयो।

कैकेइहुँ की मति हरि लीन्हयो॥

अर्थ – जब श्रीराम का राज्याभिषेक होने जा रहा था, तब आपने कैकयी की मति भ्रस्ट कर प्रभु राम को वन में भेज दिया।

बनहूँ में मृग कपट दिखाई।

मातु जानकी गई चुराई॥

अर्थ – आपने ही वन में माया-मृग(सोने का हिरण) की रचना की थी जो सीता माता के अपहरण का कारण बना।

लखनहिं शक्ति विकल करिडारा।
मचिगा दल में हाहाकारा॥

अर्थ – शक्ति प्रहार से आपने लक्ष्मण को व्यथित कर दिया तो उससे श्रीराम की सेना में चिंता की लहर दौर गयी थी।

रावण की गति-मति बौराई।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥

अर्थ – आपने रावण जैसे महापंडित की बुद्धि कुंठित कर दी थी, इसी कारण वह श्रीराम से बैर मोल ले बैठा।

दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंग बीर की डंका॥

अर्थ – सोने की लंका को आपने मिट्टी में मिलाकर तहस-नहस कर दिया और हनुमान जी के गौरव में वृद्धि की।

नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मयूर निगलि गै हारा॥

अर्थ – राजा विक्रमादित्य पर जब आपकी दशा आई तो दीवार पर टंगा मोर का चित्र रानी का हार निगल गया।

हार नौलखा लाग्यो चोरी।
हाथ पैर डरवायो तोरी॥

अर्थ – उस नौलखा हार की चोरी का आरोप विकामदित्य पर लगने के कारण उसे अपने हाथ-पैर तुड़वाने पड़े थे।

भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो॥

अर्थ – विक्रमादित्य की दशा इतनी निकृष्ट हो गयी कि उन्हे तेली के घर में कोल्हू तक चलाना पड़ा।

विनय राग दीपक महं कीन्हयों।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हयों॥

अर्थ – जब उन्होने राग दीपक में आपसे विनती की, तब आपने प्रसन्न होकर उन्हे पुनः सुख प्रदान कर दिया।

हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी॥

अर्थ – जब आपकी कुदृष्टि राजा हरिश्चंद्र पर पड़ी तो उन्हें अपनी पत्नी को बेचना पड़ा और डोम के घर पानी भरना पड़ा।

Related Articles

Dashrath Krut Shani Dev Stotra

Shri Shani Dev 108 Names

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS

Follow us on: